R.P. 19-20

2319 9318 | Peer-Reviewed International Journal | Special Issue

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह—संपादक

प्रा. प्रमोद किशनराव घन

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक

डॉ. रमेश संभाजी कुरे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
  Dr Gholap Bapu Ganpat
  Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
  9850203295, 7588057695
  vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
  saien Ghulam street
  Fatehgarh Sialkot city
  Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
  saleem_1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
  Faculty Member,Dept. of Business Admin.
  Prince Salman Bin AbdulAziz University
  Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
  115/478, Campus road,
  Konesapuri. Nilaveli (Postal code-31010),
  Trincomalee, Sri Lanka
  nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
  vikaspadalkar@gmail.com
  Cell. +91 98908 13228 (India),
  + 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
  Navgan College, Parli –v Dist. Beed
  Pin 431126 Maharashtra
  Mobi.9421336952
  umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
  B-2/8, Sukhwani Paradise,
  Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
  Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
  Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
  Dist.Kolhapur-4316113
  Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
  AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
  Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
  Mob. No. – 09827983437
  jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
  289/55, Vasanthapuram,
  ICMC, Chinna Thirupathy Post,
  Salem- 636008 +919655554464
  davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
  Dept. Of Lifelong Learning and Extension
  Dr B A M U Aurangabad pin 431004
  Mobi. 9545778985
  wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
  Jalna,Maharashtra
  shankar296@gmail.com
  Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
  A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
  Ph.no: 09811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
  Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
  Cell No: +919860768499
  yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
  At.Post.Saundhane, Near
  Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
  Mobi. 9923811609
  patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
  Vanshree Nagar,Behind Hotel
  Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
  Mobi.9422479302
  patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
  Assistant Professor, Dept. of Education,
  Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
  GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
  anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
  Associate Professor,Department of Marathi
  Banaras Hindu University,
  Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
  Mobi. 9450533466
  pbpadwal@gmail.com

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU
013

38) डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन ||130
प्रा. तुकाराम वसराम आडे, हिंगोली

39) सरदार पूर्णसिंह का निबंध 'मजदूरी और प्रेम' में कृषक चेतना ||132
प्रा. घन पी. के., जि. हिंगोली

40) कृषक की संवेदनाओं से जुडी बरखा शर्मा की कहानी: हत्या ||135
डॉ. पजई एस. आर., जि. हिंगोली

41) सिनेमा, साहित्य और किसान ||137
प्रा.डॉ. विजय वाघ, जि. हिंगोली

42) कृषक दरिद्रीकरण की शोक गाथा गोदान ||139
प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव, जि. नादेड

43) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान जीवन का यथार्थ ||143
प्रा.डॉ. दीपक विनायकराव पवार, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

44) हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक चेतना ||145
डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे, परभणी(महाराष्ट्र)

45) धूमिल के काव्य में व्यक्त किसान जीवन संघर्ष ||148
डॉ. मुकुंद कवडे, नादेड (महाराष्ट्र)

46) मैत्रेयी पुष्पा कृत 'चाक' उपन्यास में कृषक व्यवस्था ||150
डॉ. अर्चना पत्की, जि. परभणी

47) हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन ||153
डॉ. प्रवीण देशमुख, बार्शिटाकली

48) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में कृषक जीवन: बदलता परिवेश ||156
डॉ. कमलकिशोर एस. गुप्ता, नागपुर

49) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना ||159
डॉ. राम सदाशिव बडे, जि. बीड

50) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में कृषक चेतना ||163
डॉ. वडचकर एस. ए., सोनपेठ

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyala
SELU, Dist. Parbha

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-02 | 0150

जीवन प्रणाली को स्वयं अनुभूत किया था। इसी कारण राहुल उनके संबंध में ठीक ही लिखते है कि, वे सही अर्थों में अल्पशिक्षित गाँव में पूरी तरह बसे हुए किसान जीवन की कठोरताओ, व्यंग्यो और मुहावरों को अपनी ग्रामीण संपदा में जीने वाले सशक्त कवि थे।' इस तरह किसानों एवं मजदूरों की सच्चाई को व्यक्त करते हुए धूमिल की जनवादी चेतना उभरकर आयी है।

धूमिल ने अपनी कविताओं में तत्कालीन समय के किसानों का उनकी समस्याओ का वास्तविक अंकन किया है। किंतु आज भी किसानों का शोषण होता है। कई सारी समस्याएं उनके सामने है। केवल किसानों का कर्ज माफ करने से उनकी समस्याएं समाप्त नहीं होगी उनको प्रतिबध्द करने के साथ–साथ फसलों का उत्पादन खर्च कम करना, खेती को सुलभ बनाने हेतु यांत्रिकीकरण के लिए सहायता देना, उत्पादन खर्च के आधार पर फसलों की किंमत तय करना, उनको बीजली, पानी एंव सडकों की व्यवस्था करना, किसानों के उत्पाद को बाहरी देशों में भेजने के लिए सहायता करना आदि कई बाते किसानों के लिए करनी होगी। अन्यथा किसानों पर किय गए विचार और विमर्श यह केवल कागजों पर बने रहेंगे। प्रत्यक्ष व्यवहार में कुछ भी नही होगा और किसान की दशा ऐसीही रहेगी।

संदर्भ सूची :

१. भाषा की रात, संसद से सड़क तक, पृ. सं. ९९
२. आलोचना, संत्र नामवर सिंह, पृ. सं. १७
३. चानमारी से गुजरते हुए, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, पृ. सं. ५०
४. हरितक्रांति, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, पृ. सं. ६५
५. सुदामा पांडे धूमिल की कविता में यथार्थ बोध, चमनलाल गुप्त, पृ. सं. ६६
६. पटकथा, संसद से सड़स तक, पृ. सं. १२०
७. चानमारी से गुजरते हुए, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, पृ. सं. ५०
८. पटकथा, संसद से सड़स तक, पृ. सं. १४०
९. विपक्ष का कवि, धूमिल राहुल, पृ. सं. ३७

46

मैत्रेयी पुष्पा कृत 'चाक' उपन्यास में कृषक व्यवस्था

डॉ. अर्चना पत्की
हिंदी विभागाध्यक्षा,
नूतन महाविद्यालय सेलू, जि. परभणी
(संलग्न स्वा. रा. ती. म. वि. नादेड. महाराष्ट्र)

****

भारत कृषि प्रधान देश है। भारतीय जीवन का यथार्थ गाँवों में ही है। यदि हमें भारतीय संस्कृति को जानना–समझना होगा तो हमें वह संस्कृति के दर्शन गाँवों से ही प्राप्त कर सकते हैं। ''भारतीय जीवन तथा सभ्यता का मूल स्त्रोत कृषि है और उसका विस्तार ग्रामजीवन में ही परिलक्षित होता है।''[१]

गाँवों में रहनेवाले लोग कृषि से संबंध रखते है। जो ग्राम जीवन का मुख्य अंग है, कृषि करनेवाले ग्रामीण कृषक कहलाते हैं। कृषक जीवन को समग्र रूप से ग्राम जीवन में देखने को मिलता है। कृषक जीवन के समग्र रूप और उसकी विविध स्थितियों के बारे में हमें अध्ययन करना हो तो मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का अध्ययन करना। होगा क्योंकि इक्कीसवी सदी की एक सशक्त रचनाकार के रूप में मैत्रेयी के उपन्यासों का अध्ययन हम करे तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्हें रेणु और रांगेय राघव की श्रेणी में रखा जा सकता है। क्योंकि मैत्रेयी के उपन्यासों में ग्रामीण जन–जीवन को और उनकी समस्याओं को ही प्रस्तुत नहीं किया गया, बल्कि उनकी समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। उनके उपन्यास ग्रामांचलिक स्त्री केंद्रित है। क्योंकि प्रत्येक उपन्यास में स्त्री के इर्द–गिर्द कथानक, घटना प्रसंग दिखाई देते हैं। उनका समग्र साहित्य अनुभूति का साहित्य है। क्योंकि पहले सहा बाद में कहा यही उक्ति के अनुसार उनके साहित्य में अभिव्यक्ति हुई है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

स्वातंत्र्य के बाद थोड़ा बहुत परिवर्तन ग्रामीण जीवन में आया है। गाँवों में पंचायतराज के कारण आर्थिक सुबत्ता आयी है। अज्ञान, अशिक्षा, कर्ज का बोझ, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, अंधविश्वास, रूढ़ि, परंपरा, स्त्री–शोषण के बावजूद आज गाँवों में भौतिकवाद का प्रभाव दिखाई देता है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अधिकतर ग्रामीन जीवन चित्रित हुआ है। यहाँ का ग्रामीण जीवन अन्य भारतीय गाँवों से अलग है। मैत्रेयी के बेतवा बहती रही, अगनपाखी, चाक, इदन्नम, झूला नट, अल्मा कबूतरी, उपन्यासों में ग्रामीण समाज के पात्रों एवं चरित्रों को सजीव–साकार रूप प्रदान कर अपनी अद्‌भुत क्षमता का परिचय दिया है।

प्रस्तुत आलेख में मैत्रेयी कृत चाक उपन्यास की कृषक चेतना का चित्रित करने का प्रयास किया गा है। चाक उपन्यास में अंतरपुर गाँव की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को मैत्रीयी ने प्रस्तुत कर ग्रामीण व्यवस्था को दर्शाया है। भारतीय राजनीति और साहित्य का संबंध अनन्य साधारण है। गाँव की राजनीति का चित्रण मैत्रेयी ने चाक उपन्यास में चित्रित किया है। क्योंकि गाँव की राजनीति को मैत्रेयी ने करीब से देखा है। चाहे गाँव की राजनीति हो या शहरी राजनीति हमारे समाज में केवल पुरूषसत्ताक व्यवस्था है। उसी व्यवस्था को नकार कर केवल परिवार ही नहीं, बल्कि गाँव की राजनीति में स्त्रियों का स्थान देकर राजनीति का चेहरा–मोहरा बदल दिया है। स्त्रियों के साथ–साथ किसी भी चुनाव में जाति का महत्त्व है। देश का कोई भी चुनाव जाति के आधारपर होता है। राजनीतिक जातीयता कम करने के बजाय चुनाव के समय उसे बढ़ावा देते हैं। चाक उपन्यास राजनीतिक उत्थान की दृष्टि से सर्वाधिक प्रसिध्द रहा है। उपन्यास की पात्र सारंग का चित्रण करते हुए मैत्रीयी ने उसे समाज में प्रचलित रूढ़ि, प्रथा, परंपराओं के साथ संघर्षरत दिखलाया है। वह अपने पति रंजीत के ख़िलाफ़ चुनाव लड़ने को तैयार होती है। सारंग एक स्त्री होते हुए भी मैत्रेयी ने उसे गाँव की राजनीति का संघर्ष करते हुए दर्शाया है। चाहे परिणाम कुछ भी हो, उसकी मैत्रेयी ने चिंता न कर नये लोकतंत्र की बात की है। राजनीतिक क्षेत्र में अपना अस्तित्व निर्माण करने के लिए आत्मविश्वास के साथ नारी को खडा किया। सदियों से चली आ रही राजनीतिक व्यवस्था में पुरूषों की विरासत को नकारकर अपना स्थान एवं अपनी अस्मिता बनाये रखने का प्रयास मैत्रेयी ने किया है।

न केवल राजनीतिक व्यवस्था को बदलने का प्रयास मैत्रेयी ने किया है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रहार मैत्रेयी ने किया है। सामाजिक समस्या का मतलब ऐसी परिस्थिति जो समाज के बहुसंख्य लोगों के मूल्यों में विसंगत परिस्थिति। मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास में ब्रज देहात के चित्रण के साथ–साथ भारतीय ग्राम की सामाजिक परिस्थिति को उभारते हुए अंतरपूर गाँव का चित्रण जिस गाँव की जनसंख्या लगभग एक हजार है। यह गाँव जिसमें संस्कार, संस्कृति, भ्रष्टाचार, मानवीयता, अमानवीयता, स्त्रियों की समस्या, दलितों की समस्या, स्त्री–पुरूष संबंधों की समस्या, शोषण की समस्या का मैत्रेयी ने चित्रित किया है। इस उपन्यास को हिंदी उपन्यास धारा में मील का पत्थर माना जा चुका है। डॉ. राजेंद्र यादव के शब्दों में, चाक सामन्ती समाज के भीतर व्याप्त हिंसा और स्वार्थों की टकराहट की प्रामाणिक कहानी है। इस समाज का ताना–बाना हिंसा और हवस से बना है। मैत्रेयी इन दोनों को एक ही कथाकार की निगाह से पात्रों के आचार–विचार और सोच के रूप में प्रभावशाली ढंग से पकड़ती है। चाक में बिना बडबोलेपन के उन्होंने गाँव की स्त्री की जिस चेतना का विकास किया है, वह उपन्यास कला पर उनकी पकड़ को रेखांकित करता है।[२]

उपन्यास में जाति–प्रथा और छुआछूत का वर्णन किया है। जाति–व्यवस्था में अस्पृश्यता, छुआछूत पायी जाती है, जो समाज के लिए कलंक है। इस गाँव में ब्राह्मण बनिया, जाट जैसी ऊँची जाति तथा तेली, गड़रिया, कुम्हार, खटीक, चमार और नाई जैसी छोटी जातियों को भी चित्रित किया है। सारंग, भंवर जैसे पात्रों ने जाति–पाति का विरोध करते हुए मैत्रेयी ने दर्शाया है। उपन्यास में शिक्षा के महत्त्व को उद्‌घाटित किया है। सारंग पढ़ी–लिखी होने के कारण उसका गाँव की राजनीति में हिस्सा लेना वे ग्रामीण स्त्रियों के

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalay
SELU, Dist. Parbh

Scanned with OKEN Scanner

लिए प्रेरणादायी रहा है। मैत्रेयी ने चाक उपन्यास के माध्यम से वास्तविक अंकन का समाज के कोनों को तोड़नेवाली स्त्री को अंकित किया है। साथ–साथ अपनी अस्मिता बनाये रखने में मैत्रेयी के पात्र सक्षम दिखाई देते है।

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि उद्योग है। किसी भी व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है की वह व्यवस्था मजबूत हो। चाक उपन्यास में अतरपूर गाँव के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ की आर्थिक व्यवस्था जगमीता पध्दती की थी। आर्थिक परिस्थिति का परिचय इस संवाद के माध्यम से मिलता है, मसलन चमारों ने मरे पशु डाले, जूते बनाये, तेलियों ने कोल्हू चलाया, गडरियों ने मेंडे पालकर उन और दूध दिया, कुम्हारों ने घडे, शकोरे देकर किसानों की पूर्ति की, नाईयों ने सेवा टहल, हजामत, दोनो–पत्तल और बुलावे का काम संभाला। बदले में बड़े किसान इन लोगों को गुड, गेंहू, जो,चना, मटर, सरसों, दालें और भैंसो का दूध, घी देते थे।[3] उपन्यास में जमींदारी और साहूकारी के कारण भी आर्थिक विपनता दिखाई देती है।

हमारी भारतीय संस्कृति में धर्म के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्त्व नहीं। नीति–नियम सम्मत आचरण ही धर्म है, अर्थात नैतिकता का ध्यान रखा जाना ही धर्म कहा गया है। किंतु धर्म का विकृत रूप हमारे समाज में व्याप्त है उसे मैत्रेयी ने नकारा है। परंपरा, रीति–रिवाज, कर्मकांड, अंधविश्वास को मैत्रेयी ने नकारा है। धार्मिक अनुभव किया–विधी, पर्व–त्यौहार, पूजा–पाठ, वेद–पठन आदि में धर्म ने स्त्री को हकदार नहीं माना, किंतु सारी धार्मिक मान्यताओं को ढोने का कार्य स्त्री के माथे पर लादा। चाक उपन्यास में रंजीत जब खेती छोड़कर मुर्गापालन, मत्स्यपालन, व्यवसाय करना चाहता है, किंतु धर्म माननेवाले लोग उसका विरोधक करते हैं। चाक उपन्यास में होली की पूजा, शितला देवी की पूजा, करवाचौथ व्रत आदि का चित्रण हुआ है।

संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की परंपरा उत्कृष्ट एवं समृध्द है। आज भी संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति अपनी गरिमा बताये हुए है। संस्कृति समाज में अनुशासन बताये रखने का काम करती है। किंतु संस्कृति परिवर्तनवादी होती है। समय, स्थिति परिवर्तन से संस्कृति में नये तत्त्व मिलकर नव संस्कृति का निर्माण होता है। चाक उपन्यास में मैत्रेयी ने ब्रज एवं बुंदेलखेडी रस्म–रिवाजों का परिचय करवाया। गाँव की औरते–किसान–फसलों के गीत–गाते हुए सुनने का उत्सव, दीपावली त्यौहार, होली का त्यौहार मानाते दर्शाया है। लोकथा का चित्रण भी उपन्यास में है। उपन्यास में चंदना की लोककथा का वर्णन है। उपन्यास की खेरापतिन दादी के पास लोककथाओं का अद्भूत खजाना है।

मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में ग्रामीण व्यवस्था का चित्रण चित्रित करते समय ग्रामीण जनजीवन की अभिव्यक्ति की है। चाक उपन्यास में ग्रामीण समाज के पात्रों एवं चरित्रो को सजीव साकार रूप प्रदान कर अपनी अद्भूत क्षमता का परिचय दिया है। मैत्रेयी ने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक स्थिति में परिवर्तन कर समाज की जागृति की है। उपन्यास में चित्रित ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित मनुष्य की मानसिकता में परिवर्तन की बात की है। ग्रामीण व्यवस्था का चित्रण करते समय मैत्रेयी ने सभी व्यवस्थाओं को बदलना चाहा। उन्होंने पात्रों के माध्यम से मानवीय पहचान निर्माण की है। मनुष्य की मानसिकता बदलने का प्रयास उपन्यास के माध्यम से किया है। मनुष्य की मानसिकता बदलकर आधुनिक सोच को अपनाकर परिवर्तन की माँग वह करती है।

मैत्रेयी ने चाक उपन्यास के माध्यम से व्यवस्था को तो चित्रित किया है, किंतु उस व्यवस्था के, समस्या का समाधान भी दिया है। मैत्रेयी की वैचारिकता का नवीनता के प्रति उदार दृष्टिकोण का परिचय हमे चाक उपन्यास के माध्यम से प्राप्त होता है। चाक उपन्यास में आधुनिकता बोध के कई पहलू परिलक्षित होते हैं। संघर्ष, रूढ़ि–परंपराओं का विरोध, स्त्री–उत्पीड़न, पुरूषों की मानसिकता, जाति–संघर्ष, कर्मकांड, अंधविश्वास, इन सारे पहलुओं पर मैत्रेयी ने प्रकाश डाला है। उपन्यास को कथा में भले ही बिखराव हो, किंतु घटना प्रसंगों का प्रभाव प्रभावशाली रहा है। ग्रामीण व्यवस्था से संबंधित सभी, पहलुओं पर चाक उपन्यास में मैत्रेयी ने प्रकाश डाला है, साथ ही उन सारी व्यवस्थाओं में परिवर्तन कर उपन्यास को और अधिक प्रभावशाली बनाया है।

संदर्भ सूची :

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani